दीनबंधु चौधरी सर छोटूराम

24.11.1881 - 9.01.1945

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : मूल लेखक : दयाराम, विक्रम सिंह पवार
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था लखनऊ (उ.प्र.), २४.११.२०२०
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबा. 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक....

सामाजिक विषमता की धरती भारत में पिछड़े वर्ग में जन्में, मजलूमों और महरूमों में, मान सम्मान और स्वाभिमान का सामाजिक जीवन जीने की ललक पैदा करने, तथा उनमें गर्व और गौरव भाव पैदा करने का यदि किसी व्यक्ति को श्रेय जाता है, तो वह केवल और केवल दीनबंधु चौधरी सर छोटूराम को, अन्य किसी को नहीं। जिसकी प्रशंसा भारत के संविधान निर्माता डॉ अंबेडकर जैसी महान विभूति को करनी पड़ी।

चौधरी सर छोटू राम : पंजाब साइमन कमीशन स्वागत कमेटी के चेयरमैन

चौधरी सर छोटूराम अपने समाज के हित में साइमन कमीशन का स्वागत करते हैं। और फिर साइमन कमीशन स्वागत कमेटी के चेयरमैन भी चुने जाते हैं। इस साइमन कमीशन स्वागत कमेटी में, चौधरी सर छोटू राम, सर सिकंदर हयात खान, चौधरी जस जफसल्लाह खान, राजा नरेंद्र नाथ, गोपीचंद नारंग, सरदार उज्जवल सिंह एवं ओ. एम. रावर्ट थे। पक्ष विपक्ष दोनों के विद्वान इसमें शामिल थे। राजा नरेंद्र नाथ और गोकल

चंद नारंग दोनों आर्यसमाजी दोहरी चालें चल रहे थे। चौधरी सर छोटूराम ने उन दोनों को हड़काते हुए कहा, 'आप लोग वैसे तो जल्द से जल्द स्वराज पाने का राग अलापते रहे हो, अब अगर उसका स्वरूप निश्चित करने का सही समय आया है तो तुम इससे भागना चाहते हो। कमीशन का विरोध करना, मैं नहीं समझता कि समझदारी भरा कदम है। उसके सामने अपने सुझाव रखिए। उससे भी तो आपकी मंशा प्रकट हो जाएगी। जब आप किसी के समक्ष कुछ कहेंगे ही नहीं, तो केवल विरोध के लिए विरोध करेंगे। तब फिर उससे मिलने वाला ही क्या है। साइमन कमीशन गो बैक, का उग्र आंदोलन चलाने वाले लाला लाजपत राय पुलिस की लाठी से मारे गए। क्योंकि साइमन कमीशन आर्य ब्राह्मणी व्यवस्था पर हमला था। जिसे शासक जातियां किसी भी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं।'

चौधरी सर छोटूराम अंग्रेजों का साथ इसलिए दे रहे थे, कि उन्हें राष्ट्रप्रेम था। किंतु ऐसे राष्ट्रप्रेमी चौधरी सर छोटू राम को शासक जातियों ने राष्ट्रद्रोही कहा।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन चल रहा था। तब अंबाला छावनी में ब्रिगेडियर चर्चिल ने औपचारिक भोज पर भोजन के समय चौधरी सर छोटूराम से प्रश्न किया और कहा : कांग्रेस तो हमारे खिलाफ लड़ रही है, परंतु आप हमारा साथ दे रहे हैं ऐसा क्यों? चौधरी साहब ने उत्तर दिया मैं अपने ढंग से अंग्रेजी राज के खिलाफ लड़ रहा हूं। जो भी अधिकार अंग्रेज हमें सौंपते हैं उसे हम मिलकर बरतते हैं। और हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई एकता करके किसानों में फिरका परस्ती के खिलाफ जागृति लाकर आपकी फूट डालो राज करो की नीति को विफल करता हूं। मैं गांधी की तरह राजनीति में अहिंसा का अपना मन नहीं मानता। मैं अंग्रेजों की इसलिए मदद कर रहा हूं, क्योंकि हम हिटलर या जापान को अपना नया मालिक नहीं बनाना चाहते। मुझे विश्वास है कि युद्ध के बाद अंग्रेज भारत को आजाद कर के चले जाएंगे।

अंग्रेज मीडिया ने पूछा यदि ऐसा ना किया तो आप क्या करेंगे? चौधरी साहब ने उत्तर दिया, उस हालत में वजारत से त्यागपत्र तलवार हाथ में लेकर अंग्रेजी खुल्लम खुल्ला बगावत करूंगा। मैं गांधी का चेला नहीं हूं कि गिरफ्तार होकर जेल में जा बैठूं। कांग्रेश हमें अंग्रेजों का पिट्ठू और मुसलमान हमें मुसलमानों का शत्रु मानते हैं। यह उनकी अज्ञानता है। मैं यूनियनिस्ट हूं और यूनियनिस्ट ही रहूंगा।

जो अपने को राष्ट्र भक्त कहते हैं, वे राष्ट्रद्रोह के बाद भी राष्ट्र भक्त बने रहते हैं। राजा नरेंद्रनाथ बक्शी, टेकचंद, लाला रामशरण दास, आदि उस समय अंग्रेजों की जी हजूरी में लगे हुए थे, जब जलियावाले बाग में जनरल डायर निहत्थे भारतीयों पर गोलियां बरसा रहा था। यहां तक कि इन्होंने माइकल ओडवायर का अभिनंदन भी किया तथा साथ-साथ उन्हें दावत भी दी।

चौधरी सर छोटूराम के अंदर बंधुभाव है, जो भारत की धरती पर पैदा हुए। जो दयानिधि एवं दिन दीनबंधु हैं। इसलिए देशवासी उन्हें रहबरे आजम दीनबंधु चौधरी सर छोटूराम के नाम से पुकारते हैं।

.....

यशपाल मलिक : अध्यक्ष : जाट आरक्षण समिति : वास्तव में चौधरी सर छोटूराम उस समाज का हिस्सा थे, जो कमेरा समाज कहलाता है। उन्होंने डॉ आंबेडकर और ज्योतिबा फुले की तरह उनकी पीड़ा को समझा और भुगता था। भाखड़ा बांध परियोजना के योजनाकार चौधरी सर छोटूराम ही थे। जिसकी नहरों के पानी से सिंचित खेतों में पंजाब के किसानों की फसल लगाने लगी और पंजाब देश का सबसे बड़ा उत्पादक प्रांत बन गया। यह चौधरी साहब की किसानों के चेहरों पर मुस्कान लाने की अमूल्य भेंट थी।

सामान कमीशन जिसे भारत के विभिन्न वर्गों से मिलकर एक रिपोर्ट तैयार कर सरकार को देनी थी। कि किसप्रकार सभी वर्गों की भागीदारी सरकार में हो। केवल बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर और चौधरी सर छोटूराम ने इसका स्वागत किया था। और अपनी तरफ से प्रतिवेदन दिए थे। कांग्रेसियों ने बाबासाहेब डॉ अंबेडकर और सर छोटूराम पर अंग्रेज भक्त होने के आरोप लगाए थे। अपने शोषित लोगों की उपेक्षा किसी भी स्तर पर न तो चौधरी सर छोटूराम को बर्दाश्त थी, और न ही बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर को। दोनों ने शोषित वर्ग के उत्थान हेतु सत्ता में भागीदारी की भरपूर वकालत की और सफलता भी पाई। लेकिन आने वाली पीढ़ियों ने उनकी विचारधारा को स्वार्थगत राजनीति में उलझा दिया।

आरक्षण भी ऐसा ही मुद्दा है, जो दौड़ में पिछड़ गईं जातियों को सत्ता प्रतिष्ठानों में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। जहां मुट्ठी भर जातियों ने कब्जा

किया हुआ है। कमेरे वर्ग की उपेक्षा हो रही है। अतः आवश्यक है कि कमेरा वर्ग संगठित होकर संघर्ष करे और मैं भी उसका हिस्सा बनकर चलूं।

चौधरी सर छोटूराम के व्यक्तित्व और कृतित्व की चमक, गांधी नेहरू बिनोवा और लोहिया से भी अधिक थी। फिर भी चौधरी सर छोटूराम को आज हरियाणा और पंजाब के बाहर लोग जानते ही नहीं हैं। बहुजनों में जन्में चौधरी सर छोटूराम भारत की ऐसी एक महान विभूति थे, जिन्होंने 1920 में कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद महामानव बुद्ध के संदेश 'अत्त दीपो भव' अपना दीपक स्वयं बनो। अपना फैसला खुद करो, को असली जामा पहनाया। 1937 के असेंबली चुनाव में पहली बार किसी पिछड़े वर्ग के नेता ने 175 में से 120 सीटें जीतकर भारत में यूनियनिस्ट पार्टी का परचम लहराया। हैरत की बात, कि जो चौधरी सर छोटूराम यूनियनिस्ट पार्टी का संस्थापक, पंजाब प्रांत का प्रधानमंत्री स्वयं न बनकर, सिकंदर हयात खां को बनाया। मानवता के दुश्मनों ने चौधरी सर छोटूराम को छोटू खां कहकर प्रचार करना शुरू कर दिया। उसी दौरान एक दिन जब डॉक्टर अंबेडकर अपने निजी सहयोगी संस्कृत के विद्वान मानक उपाधि से विभूषित, पंजाब की धरती पर जन्म सोहनलाल शास्त्री के साथ बैठे हुए थे। उनके आसपास और कोई भी नहीं था। सोहन लाल शास्त्री से बाबासाहेब ने पूछा कि आजकल पंजाब की राजनीति में चौधरी छोटूराम की बहुत चर्चा है, इस इंसान में ऐसा क्या गुण है जो इतना प्रसिद्ध है। क्या वह बहुत पढ़े लिखे व्यक्ति हैं, अथवा क्या वे बहुत बड़े वकील हैं, या बहुत बड़े धनी व्यक्ति हैं। ऐसा कौन सा गुण है जो उन्हें पंजाब के बहुजनों, मुसलमानों और सिखों में प्रसिद्धि प्रदान की है। 1944 में पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी का राज था। जो पंजाब के बहुजन, मुसलमानों और सिख किसानों ने हिंदू साहूकारों से अपनी जमीन जायदाद बचाने के लिए यूनियनिस्ट पार्टी कायम की थी। सोहनलाल शास्त्री ने बाबासाहेब को उत्तर दिया : चौधरी सर छोटूराम में पहला गुण यह है, कि उनकी कोठी पर 24 घंटे लंगर लगा रहता है। कोई भी व्यक्ति वहां जाकर खाना चाहे तो उसे वहां खाना मिल सकता है। दूसरा उन्हें पंजाब के किसी कोने से दो पैसे का भी पोस्टकार्ड लिखो, फिर चाहे उस पत्र में उन्हें गालियां ही क्यों न दी गई हों, वे उस पत्र का उत्तर अवश्य अपनी लेखनी से देते हैं।

चौधरी सर छोटूराम के जीवन काल में सनातनी हिंदुओं ने शूद्रों और महिलाओं की शिक्षा के दरवाजे ही बंद नहीं कर दिए थे, बल्कि इनके ऊपर बहुत जुर्म ढाए। लार्ड मैकाले द्वारा

घोषित अध्यादेश की वजह से चौधरी सरछोटूराम ने उच्च शिक्षा प्राप्त की। यह सर्वविदित है कि जाट कौम एक मार्शल कौम हमेशा से रही है। मार्शल कौम में कोई उच्चशिक्षा प्राप्त पैदा हो जाए, यह ना तो हिंदूसभाई ब्राह्मणों को और न ही आर्यसमाजी ब्राह्मणों को ही पसंद था। उच्चशिक्षा प्राप्त चौधरी सर छोटूराम आर्यसमाज के कार्यक्रमों में शोध के लिए आने-जाने लगे। तो जाट जाति के लोग गलतफहमी में आर्यसमाजी ही समझ बैठे। आर्यसमाजी ब्राह्मणों ने चौधरी सर छोटूराम के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पर्दा डालने के दोषी रहे, तो जाट समाज के लेखक और साहित्यकार भी कहीं से कम नहीं थे। जाट दबंग जातियों को मूल बहुजन समाज के बेबस और लाचार जातियों से, दूरी बनाए रखने के लिए तमाम कहावतें गढ़ी, जिससे इनमें जुड़ाव न हो। जैसे :-

जाट मरै तब जानिए जब तेरवी भी हो जाए।
अहीर मिताई तब करै जब सबै मीत मर जाए।।
अहिर, गड़ेरिया, पासी तीनों सत्यानाशी।।।

उत्तरी भारत के हरियाणा और पंजाब छोड़ अन्य प्रांतों में जमीदारों का मतलब, सीमा से अधिक जमीन का मालिक। किंतु हरियाणा, पंजाब में जमीदार का मतलब मात्र किसान। वह भी छोटी जोत का किसान। चौधरी सर छोटूराम ने उसे 'बेचारा जमीदार' की संज्ञा दी।

विक्रम सिंह पवार : भारत के परिपेक्ष में अगर हम दीनबंधु सर छोटूराम की सामाजिक पहचान का आकलन करें, जो उनकी चतुर्वर्णीय सामाजिक व्यवस्था में सन्निहित है। जाट त्रैवर्णिकों को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य वर्ण से अलग, चौथे शूद्र वर्ण के अंग हैं। जो जातियों का वर्ण है। जातियों में बंटे लोगों से जब कोई उनकी सामाजिक पहचान जानना चाहता है और उससे पूछता है कि आप कौन हो, तो वह कभी अपना वर्ण शूद्र नहीं बताता, वह अपनी जाति बताता है। कि वह जाट गुर्जर अहीर गड़रिया चमार महार मेहतर है। किंतु जब कोई मिश्रा से, पुंडीर से, अग्रवाल से, उसकी सामाजिक पहचान जानने के लिए पूछता है कि आप कौन हो, तो वह हमेशा अपना वर्ण बताता है। कि वह ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य है। इसका सीधा सा अर्थ निकलता है, त्रैवर्णिकों का वर्ण जातिविहीन वर्ण है। अर्थात हर वर्ण में खानपान, उठन बैठन, बोलचाल तथा रोटी बेटी के व्यवहार में समता है। ऐतिहासिक दृष्टि से शुद्र वर्ण उन लोगों का वर्ण है, जो भारत के मूलनिवासी हैं। जातियों में बंटे हुए लोगों को शूद्र होने का एहसास ही नहीं है। जिसमें खानपान, उठन बैठन,

बोलचाल में विषमता, रोटी बेटी के व्यवहार में विषमता, व्याप्त है। चौथे वर्ण की जातियां वर्ण विहीन हैं। यदि शूद्र वर्ण हाईलाइट हो गया, तो जातियां विलुप्त हो जाएंगी, जैसा कि त्रिवर्णीकों में है। यदि जातियां लुप्त हो गईं, तो वर्ण का सामाजिक ध्रुवीकरण होगा।

राष्ट्रपिता फूले के सामाजिक आंदोलन को तहस-नहस करने के लिए, आर्य ब्राह्मणों ने अपने बीच से महर्षि दयानंद सरस्वती को भेजा। बाबासाहेब डॉक्टर आंबेडकर और चौधरी सर छोटूराम के सामाजिक आंदोलन को ध्वस्त करने के लिए, आर्य ब्राह्मणों ने मूलनिवासी बहुजनों के बीच मोहनदास करमचंद गांधी और डॉक्टर राम मनोहर लोहिया को भेजा। मात्र इसलिए कि देश की सत्ता अंग्रेजों के हाथों से कहीं मूलनिवासी बहुजन समाज के हाथों में न चली जाए और अपने प्रयास में सफल रहे।

राष्ट्रपिता फुले जहां आर्य ब्राह्मणों के काले कारनामों से परेशान थे। वही चौधरी सर छोटूराम स्वदेशी साहूकारों से परेशान थे। साहूकार किसानों को ऋण देता था, और अनपढ़ किसानों को ऋण से कभी उऋण नहीं होने देता था। विदेशी साहूकारों की सांठगांठ से, स्वदेशी साहूकार इस हद तक उतर आता था, कि भोले-भाले किसानों से बेगार लेता था। स्वदेशी साहूकारों ने तो सहनशीलता की सीमा पार करते हुए जिन किसानों ने ऋण अदा करने में बेबसी और लाचारी का रोना रोया, तो बेबस और लाचार किसानों की बहन बेटियों की आबरू से खेलने का प्रस्ताव तक रख दिया। जिसके कारण अपनी बहन बेटियों की आबरू बचाने के लिए किसानों ने सारी सीमाएं लांघ कर ऐसे साहूकारों को मौत के घाट उतार दिया। चौधरी सर छोटूराम ने अपनी पुस्तक 'बेचारा जमीदार' में किसानों को फटकार लगाई है। जाटों का संबंध, भारतीय गौरवशाली सिंधु घाटी की सभ्यता, मूलनिवासी बहुजनों की सभ्यता से है।

चौधरी कृष्णचंद दहिया : भारत के इतिहासकार राजनीति के मकसद से इतिहास लिखते हैं। इस घपले में किसान छूट जाता है। सारी कहानी मोहनजोदड़ो हड़प्पा की है। आज तक एक भी इतिहासकार ने यह नहीं बताया कि, सिंधु सभ्यता का किसान कौन था, आज वह कौन है। यह इतिहास उन लोगों ने लिखे हैं, जिनके बाप-दादा भी किसानों को गाली देते थे।

चौधरी कृष्णचंद दहिया और भी स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, कबीर ने ब्राह्मणी धर्मग्रंथों को नकार दिया : "तू कहता कागज की लेखी, मैं कहता आंखन आंखन की देखी"

हम सिंधु सभ्यता के वारिस ही नहीं, बल्कि उन चार पांच कौमो में से एक हैं, जिन्होंने दुनिया में : अन्न उत्पादन, घर बनाने, घरेलू पशुपालन में कदम रखा। हमारी ही भाषा को दूसरों ने अपनाया। हम जाट, कुम्हार, जोगी, नाई, चर्मकार, जो पश्चिम उत्तर भारत में है, ही मूल सभ्यता कालीन है।

राष्ट्रपिता फूले के अनुसार : पहला केवल खेतियर किसान अथवा कुनबी, दूसरा माली और तीसरा धनगर। ये तीन भेद होने के कारण खोजे जाए तो दिखाई देता है कि, जो मूलनिवासी लोग केवल खेती करके निर्वाह करते थे, वह कुलवाड़ी या कनबी हो गए। जो खेती के काम के साथ बागवानी करने लगे, वे माली और जो यह दोनों काम करते-करते अन्य भेड़ बकरियां भी पालने लगे, वे धनगर हो गए। किंतु अब इन्हें 3 जातियां ही माने जाने लगा है। लेकिन इन दिनों इन जातियों के बीच रोटी बेटी का व्यवहार नहीं होता है।

डॉ बाबासाहेब आंबेडकर : दक्षिण के द्रविड़ और उत्तर के असुर अथवा नाग एक ही परंपरा के लोग हैं। दक्षिण के लोगों के लिए द्रविड़ शब्द का विशेष प्रयोग होने से यह नहीं भूलना चाहिए कि, नाग और द्रविण एक ही हैं। वह एक ही प्रजाति के दो भिन्न नाम हैं। नाग उनका जातिगत सांस्कृतिक नाम है और द्रविड़ भाषागत। इस प्रकार दास वही है जो नाग हैं, और नाग वही है जो द्रविड़ हैं। दूसरे शब्दों में हम भारत के नस्लों के संबंध में इतना ही कह सकते हैं, अधिक से अधिक दो नस्लें ही रही हैं, आर्य और नाग।

जाट नागवंशी होने के कारण भारत का मूलनिवासी हैं। जिसे आर्य ब्राह्मणों ने नस्लभेद के कारण, अन्य किसान कौमों के साथ शुद्र वर्ण का हिस्सा बनाया। इसीलिए चौधरी सर छोटूराम ने मात्र जाटों के लिए काम नहीं किया। बल्कि उन्होंने तो संपूर्ण किसानों की भलाई के लिए काम किया। जिसमें मात्र जाट ही नहीं थे, बल्कि पिछड़े वर्ग की सारी जातियां थीं। शासक जातियों का हमेशा से प्रयास रहा है, कि शोषित पीड़ित समाज का नेतृत्व करने वाला कोई व्यक्ति किसी भी दशा में शोहरत प्राप्त ना कर सके।

चौधरी सर छोटूराम का जन्म 24 नंबर 1881 के दिन, जिला रोहतक, ग्राम सापलामंडी के पास, गढ़ी नामक ग्राम में हुआ था। इस गांव के साधारण से किसान चौधरी सुखीराम के तीसरे पुत्र के रूप में माता सीरिया की कोख से जन्म लिया। परदादा चौधरी रामरतन के प्रपौत्र, चौधरी रामदास के पौत्र। चौधरी सुखीराम के 3 पुत्र : नेकराम, रामस्वरूप, छोटूराम थे। इनमें छोटूराम सबसे छोटे थे। बालक को सभी घरवाले प्यार से छोटू कहकर

पुकारते थे, इसलिए इनका नाम छोटू पड़ गया। बालक बड़ा नटखट तथा बढ़ती उम्र के साथ अत्यधिक कुशल तथा स्पष्टवादी भी था। अनुनय-विनय असफल हो जाया करती थी, तो वह बहस तथा तर्कों का आश्रय लिया करता था। और जब यह भी विफल हो जाया करता, तो अपने विरोधियों से हाथापाई करने पर उतारू हो जाया करता था। वह जब 9 वर्ष का हुआ, तब उसको सापला के प्राइमरी स्कूल में दाखिला करा दिया गया। स्कूल में उनके दाखिले के शीघ्र बाद ही उनका विवाह 10-11 वर्ष की आयु में 5 जून 1893 को ज्ञानो देवी के साथ संपन्न हुआ। मात्र 2 वर्ष बाद ही उनके माता-पिता ने उन्हें चौधरी नन्हा सिंह की बेटी ज्ञानो देवी, जिसे घर-परिवार में गंधौली नाम से पुकारा जाता था, जिसका घर अर्थ होता है दुर्गंधयुक्त। जब उस समय किसी के घर में संतान होती थी, तो बच्चे का नामकरण करने हेतु लोग ब्राह्मण पुरोहित के यहां जाते थे। ब्राह्मण पुरोहित बच्चे का नाम ब्राह्मणी व्यवस्था के अनुसार तय करता था और शुद्र बच्चे का घृणासूचक नाम बताकर अभिभावक को यह कहकर आश्वस्त करता था, कि बच्चे का नाम घृणासूचक रखने पर बच्चे की आयु बढ़ेगी।

चौधरी सर छोटूराम बहुत नटखट थे। नटखट बच्चे पढ़ने में बहुत तेज होते हैं। तेज बुद्धि के कारण उन्होंने पहली और दूसरी कक्षाएं एक साथ में ही पास कर लीं। व्याकरण और गणित नीरस विषय होता है, किंतु बालक छोटूराम ने इनमें भी काफी योग्यता प्राप्त कर ली। जब उन्हें चौथी कक्षा में पढ़ते हुए 5-6 महीने ही हुए थे, तब उन्होंने उर्दू व्याकरण में इतनी अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली थी, कि पांचवी कक्षा में पढ़ाने और उसकी देखरेख का काम अध्यापकों ने उन्हें ही सौंप दिया। चार वर्ष तक पढ़ने के बाद 1895 में उन्होंने सापला के स्कूल की पूर्ण पढ़ाई समाप्त कर ली और परीक्षा में जिले भर में प्रथम आए। जिले में प्रथम श्रेणी में पास होने के बाद उन्होंने मिडिल स्कूल झज्जर में दाखिला लिया, तो उन्हें छात्रवृत्ति मिलने लगी।

इसके बाद चौधरी सर छोटूराम ने आगे पढ़ाई के लिए दिल्ली पढ़ने का प्रस्ताव अपने अनपढ़ माता-पिता के सामने रखा। पिता के सामने आर्थिक समस्या गंभीर थी। तो उन्होंने सोचा कि चलो सापला वाले लाला जी से राय ले लें। बेटे को साथ ले लाला जी के पास पहुंचे। सांपला वाले लाला जी ने पहुंचते ही बालक छोटूराम के पिता को अपना पंखा खींचने का आदेश दिया। इस पर बालक छोटूराम तिलमिला उठा। उसने लाला को फटकारते हुए कहा कि तुम्हें लज्जा नहीं आती, अपने लड़के के रहते हुए मेरे आदरणीय

पिताजी से पंखा खिंचवाते हो। इस पर लाला बहुत लज्जित हुआ और उसने विवश होकर पास बैठे अपने लड़के को पंखा खींचने के लिए कहा। इस घटना ने स्वदेशी बनियों के प्रति चौधरी सर छोटूराम के मन में घृणा का भाव भर दिया।

बालक छोटूराम के विद्यार्थी जीवन में एक और दूसरी घटना घटी, जिसका जिक्र चौधरी रघुवीर सिंह शास्त्री ने किया है : एक दूसरे अवसर पर विद्यार्थी छोटूराम अपने पिताजी के साथ उसी लाला के मकान पर गए। लालाजी ने इनके पिताजी को बैठने के लिए मोड़ा दे दिया और इन्हें खाट पर अपने पांव की ओर बैठने का संकेत किया। छोटूराम ने तुरंत झल्लाकर कहा, मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं किसी ब्याजखोर महाजन के पांव की ओर नहीं बैठूंगा, चाहे मुझे कितनी देर खड़े रहना पड़े। इस पर लाला ने व्यंगभरी मुस्कान करते हुए इनके लिए भी मोड़ा मंगवा दिया।

बेबसी और लाचारी की ऐसी स्थिति में छोटूराम के चाचा राजाराम ने उन्हें ₹40 की सहायता देने का आश्वासन दिया। यह राशि सेंट स्टीफन्स स्कूल की सभी प्रकार की फीस चुकाने के लिए पर्याप्त थी। किसान जाति का मेधावी बालक होने के कारण मिशन हाई स्कूल में बालक छोटूराम की फीस ही नहीं, बल्कि 6 रुपया मासिक वजीफा भी देना प्रारंभ कर दिया। अब छोटूराम को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी का अनुभव नहीं हुआ। 1901 में उन्होंने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक परीक्षा पास की। छोटूराम इंटरमीडिएट परीक्षा पास करने के लिए बहुत उत्सुक हुए। संयोगवश सेठ छाजूराम सहारनपुर होकर अपने गांव अलखपुर (भिवानी) ट्रेन से जा रहे थे। ट्रेन में ही उनकी मुलाकात हो गई छोटूराम से। छोटूराम ने अपनी बातें सुनाईं, छाजूराम बालक छोटूराम की जिज्ञासा से बहुत प्रभावित हुए। लाला छाजूराम ने छोटू राम को सेंट स्टीफन्स कॉलेज दिल्ली में संस्कृत विषय लेकर पढ़ने के लिए आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया।

हैरतअंगेज बात यह, कि आर्यसमाजी सेठ छाजूराम को, जिन्होंने छोटूराम को संस्कृत पढ़ने के लिए आर्यसमाज के डीएवी कालेज में सलाह दी थी, उन्हें जाट होने के कारण कोलकाता शहर में आर्य श्रेष्ठ नहीं समझा गया। उन्हें वहां जाति प्रथा का दंश झेलना पड़ा। चौधरी बलबीर सिंह लिखते हैं : सेठ छाजूराम भी छोटूराम के समाज किसान परिवार से संबंधित थे और उन्होंने भी मैट्रिक तक शिक्षा रेवाड़ी के हाईस्कूल में प्राप्त की थी। कुछ समय बाद वह कोलकाता चले गए और जूट की बोरियों का व्यापार करने में

रुचि लेने लगे। समय का अभाव रहने लगा, तो उन्होंने एक ढाबे में भोजन करना शुरू कर दिया। यह ढाबा एक हरियाणवी ब्राह्मण का था। उसी ढाबे में कुछ ब्राह्मण व सेठ भी भोजन करते थे, भोजन करने के बाद वे ढाबे के मालिक से मिले और बोले, आखिर यह हो क्या रहा है। पंडित जी आप पंडित जी ही है न? आपने अपनी जाति तो नहीं बदल दी, जो अछूत वर्ण के लोगों को भोजन करवा रहे हो। अगर आपने यही सब करना है तो कल से हम लोग ढाबे पर भोजन करने नहीं आएंगे। यही से छाजूराम ने न केवल स्वयं को ऊंचा उठाने का इरादा पक्का कर लिया, बल्कि अपनी जाति की भी हरप्रकार से सहायता करने की प्रतिज्ञा ठीक उसी प्रकार से ली कर ली थी, जिसप्रकार से दो बार सांपला के महाजन से अपमानित होने के बाद छोटू राम ने की थी। अच्छे अंकों के साथ छोटूराम ने B.A. परीक्षा 1930 में पास की। तमाम अवरोधों के बावजूद छोटूराम ने हिम्मत नहीं हारी।

चौधरी छोटूराम तंगी हालत में ही 1905 में कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह के यहां ₹40 प्रति माह की दर पर नौकरी कर ली। किंतु उन्हें शेर-ए-पंजाब बनना था। यह तभी संभव था, जब वे उच्चशिक्षा प्राप्त कर पाते। डॉक्टर अंबेडकर ने कहा था : शिक्षा वह उस शेरनी का दूध है, जो पियेगा वही शेर बनेगा और वही गुर्रायेगा। छोटूराम आगरा के LLB कालेज में दाखिला ले लिया और यहीं पर उन्होंने सेंट जॉन्स स्कूल में शिक्षक का कार्य करना भी प्रारंभ कर दिया। 1911 में उन्होंने कानून की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर ली और आगरा के कोर्ट में ही अपनी वकालत भी प्रारंभ कर दी। यहीं से उनकी शोषित-पीड़ित मानवता के प्रति प्रतिबद्धता की शुरुआत हुई।

आर्यसमाजी ब्राह्मणों ब्राह्मणों ने जब देखा, कि उत्तरी भारत के हरियाणा प्रांत में राष्ट्रपिता फुले जैसा एक जाट युवक जिसने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, और उसे अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में महारत हासिल है, कहीं मूलनिवासी बहुजनों के कान उसी तरह न फूंक दे, जैसा कि ज्योतिबा फुले ने फूंका था। आर्यसमाजी ब्राह्मणों ने हरियाणा में आर्य समाज का झंडा गाड़ दिया। हरियाणा प्रांत में आर्य समाज की जैसे बाढ़ आ गई।

आर्यसमाज के अस्तित्व को लंबी अवधि तक बनाए रखने के लिए, चौधरी सर छोटूराम की जन्मभूमि रोहतक में, आर्य ब्राह्मणों ने 1976 में दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय की स्थापना की।

सनातनी और आर्यसमाजी ब्राह्मणों ने जब देखा, कि छोटूराम मात्र अपनी जाति का ही शुभचिंतक नहीं, बल्कि यह तो मूलनिवासी बहुजन समाज का शुभचिंतक है। और यहां तक कि ईसाइयों और मुसलमानों का हमदर्द है। फलत: आर्यसमाजियों ने चौधरी सर छोटूराम को अंग्रेजों का पिट्ठू और सर छोटू खां के खिताब से नवाजा।

चौधरी सर छोटूराम चाहते थे कि भूमि हस्तांतरण कानून लागू हो। भूमिहीनों को, जिस भूमि को वे जोतते हैं, उस भूमि पर स्थाई तौर पर उनका अधिकार हो। किंतु द्विजातियां किसानों के हित में प्रस्तावित हर कानून का विरोध कर रही थीं। विरोध में सबसे आगे आर्य समाज था। जिसका नियंत्रण और अधिपत्य शहरी खत्री बनियों और महाजनों के पास था।

चौधरी सर छोटूराम को आर्यसमाज की स्पष्ट समझ थी। कि आर्यसमाज द्विजातियों का एक ऐसा संगठन है, जो देशवासियों की आंख में केवल धूल झोंकने का कार्य करता है। जिससे लोग यथार्थ से अलग-थलग पड़े रहें। सर छोटूराम के विरोधी डॉक्टर गोकल चंद नारंग और राजा नरेंद्र नाथ, जो कट्टर आर्य समाजी थे, उन्होंने उन्हें पग पग पर शिकस्त देने का जैसे ठान लिया था।

यही गोकल चंद नारंग राजा नरेंद्र दत्त ने आर्य समाज का झांसा देकर, कि आर्य समाज ही सच्चे देशभक्त और राष्ट्रभक्त हैं। उन्होंने जाति प्रथा के विनाश पर एक अधिवेशन करने का प्रस्ताव भारत के संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर के समक्ष रखा। उन्होंने जाति पाति तोड़क मंडल बनाया। उन्होंने डॉक्टर अंबेडकर को मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित किया। डॉ बाबासाहेब अंबेडकर को बहुत आश्चर्य हुआ कि, आखिर आर्यसमाजी तो धूर्त होते हैं, फिर मुझ जैसे व्यक्ति को क्यों बुला रहे हैं। डॉ अंबेडकर ने उनकी धूर्तता का पर्दाफाश करने के लिए हां कर ली। आर्य समाजियों को संदेह था, यदि डॉक्टर अंबेडकर को सीधे मंच दे दिया, तो कहीं वह आर्यसमाज का भव्य महल ही न नष्ट कर दें। इसलिए उन्होंने डॉ अंबेडकर से निवेदन किया, कि मंडल आपके भाषण की लिखित प्रति पहले चाहता है। डॉ अंबेडकर ने अपने भाषण की लिखित काफी उन्हें दे दिया। भाषण पढ़ते ही उन सभी आसमाजियों के होश उड़ गए। इसके बाद उन्होंने डॉ आंबेडकर को पत्र लिखा और कहा, सम्मानीय डॉक्टर साहब 24 तारीख के आपके पत्र को हमें दिखाया गया है, हमें इसको पढ़कर थोड़ी निराशा हुई है। या जो स्थिति उत्पन्न हुई है, शायद आप इसे

पूरी तरह वाकिफ नहीं हैं। पंजाब के सभी हिंदू आपको इस प्रांत में आमंत्रित किए जाने के विरुद्ध हैं। जात पात तोड़क मंडल में बड़ी तीखी आलोचना हुई है। और सभी ओर से झाड़ फटकार मिल रही है। सभी हिंदू नेताओं ने, जिनमें भाई परमानंद एमएलए हिंदू महासभा के पूर्व अध्यक्ष, महात्मा हंसराज, गोकल चंद नारंग, राजा नरेंद्र नाथ आदि शामिल हैं। मंडल के इस निर्णय से अपने आपको अलग कर लिया है। आर्य समाज के जाति पाति तोड़क मंडल के सदस्यों ने डॉ आंबेडकर भाषण के कुछ अंशों को हटाने की मांग की। डॉ आंबेडकर सहमत नहीं हुए और उन्होंने जवाब दिया कि आप लोग भाषण के कुछ अंश को हटाने की बात करते हो, मैं उसमें से कामा और मात्रा भी बदलने वाला नहीं हूं। चाहे जाति पाति तोड़क मंडल मुझे अधिवेशन की अध्यक्षता करने का अवसर दे अथवा नहीं।

चौधरी सर छोटूराम के कृतित्व को यदि सही ढंग से देश के सामने रखा गया होता तो, चौधरी सर छोटूराम गांधी और नेहरू से कहीं अधिक चमकते। देश की जनता ने जहां मोहम्मद अली जिन्ना को 'कायदे आजम महानायक' की उपाधि दी। वही लोग चौधरी सर छोटूराम को 'रहबरे आजम अर्थात रहमदिल इंशान', मजलूमों और महरूमों के रहनुमा, दीनबंधु की उपाधि से विभूषित किया। अंग्रेजों ने उन्हें 'सर' की उपाधि दी, मात्र उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर, जिसपर भारत के मूलनिवासी बहुजनों को गर्व है।

चौधरी रंजीत सिंह : एक दिन जाट जाति के कुछ वृद्ध लोग किसी काम के लिए जिला कचहरी आए हुए थे, और साथ में हुक्का भी लिए हुए थे(हरियाणा और पंजाब में हुक्का सामाजिकता का प्रतीक है)। उन्होंने किसी काम के लिए चौधरी छोटूराम को बुलाया और चौधरी छोटूराम उनके मध्य जा कर बैठ गए और हुक्का का पीना आराम कर दिया। फिर क्या था? छोटूराम के इस व्यौहार को वकीलों ने वकालत के स्तर का गिराने वाला समझा। आपस में कानाफूसी होने लगी और विविध प्रकार के कटाक्ष किए जाने लगे। कोई कहता कि मूढ़ देहातियों के दिमाग को खराब कर रहा है। कोई व्यंग करता, कि इन्हीं को खुरदुरे गवारों में से आया है। यह जानता ही क्या है। कोई कहता एक दिन यह वकीलों के मान-सम्मान को इन गवई गवारों के हाथों मिट्टी में मिला देगा। अंत में वकीलों ने निर्णय लिया कि छोटूराम ने वकील समाज के अलिखित और परंपरावादी व्यवहार संहिता के विरुद्ध आचरण किया है। अतः इस संबंध में इन को समझना चाहिए।

वकीलों की बातें सुनकर सर छोटूराम साहब ने उत्तर दिया, कि मुझे आश्चर्य है कि मजदूर अपने आपको मालिक से ऊंचा समझता है। यह तो हमारे अन्नदाता हैं। हम मुवक्किल की अशिक्षा और भोलेपन का अनुचित लाभ उठाते हैं। जिनसे हम मुंह मांगी मजदूरी लेते हैं, उनके साथ अच्छा व्यवहार न करें, यह कहां की नैतिकता है। जहां तक उनके साथ हुक्का पीने की बात है, तो मुझे बताइए कि यदि मैं अपनी जाति, गोत्र और समाज के व्यक्तियों के साथ हुक्का न पियूं, तो किसके साथ पियूं। आप में जो कायस्थ हैं वह कायस्थों के साथ, जो ब्राह्मण हैं ब्राह्मणों के साथ, जो बनिए हैं बनियों के साथ हुक्का पीते हैं। मैं जाट हूं तो जाटों के साथ ही तो मेरा हुक्का पीना बनता है। जब सामाजिक संरचना ही वर्ण जाति से निर्मित है।

चौधरी छोटूराम अपने सामाजिक जीवन के यथार्थ पर प्रकाश डालते हैं। अपने जीवन की आरंभिक अवस्था में मैं केवल जाटों की उन्नति में ही संलग्न रहा हूं। इसके बाद मैंने अंतदृष्ट्रि से समझ लिया कि, पंजाब को निहित स्वार्थ वाले व्यक्तियों से बचाने के लिए अपने कार्य क्षेत्र में धर्म के भेदभाव के बिना समुचित रूप में सभी किसानों को सम्मिलित करना होगा।

डॉक्टर अंबेडकर ने भी जिस महार अछूत जाति में जन्म लिया था, सर्वप्रथम उन्होंने अपने सामाजिक आंदोलन का साधन महार जाति को ही बनाया था। तत्पश्चात उन्होंने अछूत एवं सछूत सभी जातियों को अपने आंदोलन का हिस्सा बनाया। और इतना ही नहीं उन्हें एक सूत्र में बांधने के लिए भारतीय संविधान में 'पिछड़ा वर्ग' नाम भी दिया।

चौधरी सर छोटूराम किसानों को संबोधित करते हुए अपनी पुस्तक "बेचारा किसान" में कहते हैं : ऐ किसान! तुझे अब तक शांति और संतोष का पाठ पढ़ाया गया। मैं तुझे असंतोष का पाठ पढ़ाना चाहता हूं। भाग्य के भरोसे बैठे रहने की शिक्षा गलत है। मैं कहता हूं तू भाग्य को शिकायत कर। तुझे शांति की शिक्षा दी गई है, मैं तुझे क्रांति की विशेषताओं का गुण ग्राहक बनाना चाहता हूं। शांति तो शमशान भूमि में ही हो सकती है, जीवित मनुष्यों की बस्ती में शांति कैसी?

किसान यदि तू जीवित है और जीवित रहते हुए यदि कमरे में बंद नहीं होना चाहता, तो शांति का जादू तोड़ दे। सिर से पैर तक आवाज बन जा। अपने भीतर नदी का शोर पैदा कर। समुद्र का ज्वार पैदा कर। शेर की दहाड़ से सीख। अपने तन की रक्षा कर, इसका

सम्राट बनकर रह। ऐसा न समझ कि तू कुछ भी नहीं है : तेरे भीतर पहाड़ की मजबूती है, तूफान की तेजी वास करती है और बाढ़ की ताकत छुपी है। नदी का वेग छुपा हुआ है, सूरज का प्रकाश छुपा हुआ है। तू ही पीर और मुरीद, गुरु और चेला, साविक और बंदा, स्वामी और दास, शासक और शासित सब कुछ है। पर तेरी हीनभावना और हीनविचारों ने तेरा बेड़ा गर्क कर रखा है। तो मेरी के सिर्फ दो बातें मान ले- एक बोलना सीख ले, दूसरी दुश्मन को पहचान ले।

लेकिन आज भी जाट जाति के लोग, गैर जाट मूलनिवासी जातियों से अलग-थलग दिखाई पड़ते हैं। किंतु आर्य ब्राह्मणी झांसे के शिकार होने कारण वे अन्य श्रमशील कौमों को अपने साथ नहीं जोड़ सके। इसका खामियाजा पूरा मूलनिवासी बहुजन समाज आज भी भुगत रहा है। और खुद भी भुगत रहे हैं। जाटों के बड़े-बड़े सम्मानित व्यक्तियों के ऊपर खुलेआम लट्ठ बजना और बदले में कोई प्रतिक्रांति न होना, इसका जीता जागता उदाहरण है।

चौधरी सर छोटूराम का राजनीतिक दर्शन धर्म से बिल्कुल अलग-थलग है। वे धर्म को व्यक्तिगत मामला मानते हैं। चौधरी सर छोटूराम के अनुसार : "मेरे किसान! मजहब को मस्जिद, मंदिर और गुरुद्वारों में बंद कर दें। मौलवियों, पंडितों और ज्ञानियों से अपना पीछा छुड़ा लें। पांचों वक्त की नमाज पढ़, रोजे रख, दान जकात दे, गुरु ग्रंथ साहब का पाठ कर, जब जी पढ़। वेद पढ़, गीता पढ़, संध्या कर, आरती उतार, लेकिन मजहब को राजनीति के दायरे से बाहर रख। पंजाब की राजनीति में तमाम किसान बिना मजहब, बड़ी आसानी के साथ और बड़ी कुदरती तौर से एक प्लेटफार्म पर आ सकते हैं। परंतु शर्त यह है कि वे मौलवियों, पंडितों, ग्रंथियों के क्लोरोफॉर्म से अपने आप को बचाए रखें।"

चौधरी सर छोटूराम 1912 में आगरा से रोहतक आ गए और हिंदू महासभा से अपना संबंध जोड़ लिया। उस समय ऐसा लगता था कि हिंदू महासभा एक राजनैतिक संगठन है, और सारे हिंदुओं का हितेषी है। हिंदू महासभा में रहते हुए चौधरी साहब ने यह देखा कि उसका नारा हिंदू हित की बात तो करता है। लेकिन इस सभा के नेता द्विजातियों यानि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तक ही सोचते हैं। मैं हिंदू धर्म के नाम पर मुसलमानों से मोर्चा लेकर आगे बढ़ू अथवा गरीब और शोषित से हानियों के लिए पूंजीपतियों से लड़ू।

उन्हें विश्वास हो गया कि पहली लड़ाई में जीवन को व्यर्थ गबाना है। और दूसरे लड़ाई लड़ना शुभ कार्य है। और अंततः उन्होंने हिंदू महा से संपर्क तोड़ लिया।

चौधरी सर छोटूराम गांधी जी के अछूत्तोधार के नाटक को अच्छी तरह समझते थे। इसलिए सामरिक जाति संघ दिल्ली के अधिवेशन में अछूतों को संबोधित करते हुए उन्हें आगाह किया कि, "कोई जाति और वर्ग जो अपनी उन्नति चाहता है वह अपने अंदर लीडर पैदा करे"। देश का दोहन आरंभ से ही गोरे बनियों में इन काले बनियों के माध्यम से किया। पिछड़े वर्ग को शासक जातियों से सावधान रहने की चेतावनी देते हुए कहा, यदि तुम किसी पिछड़े जाति से हो, तो किसी बाहर वाले (द्विजातियों) का नेतृत्व स्वीकार करने से दृढ़तापूर्वक इंकार कर दो।

चौधरी सर छोटूराम मुजफ्फरनगर जाट हाई स्कूल के वार्षिकोत्सव में मूलनिवासी बहुजनों को बुद्ध के मार्ग 'अत्त दीपो भव' पर चलने का संदेश देते हुए कहा, 'मैं आप लोगों से कहना चाहता हूं कि अब तक तुमने दूसरी जमातों के नेताओं के पीछे चलकर बहुत देख लिया। अपना नेता अपने अंदर से चुनने की रीत अपनाने से तुम्हारे अंदर स्वाभिमान पैदा होगा। और वह स्वाभिमान तुम्हारी सामूहिक उन्नति का साधन होगा। अल्पसंख्यक, बहुसंख्यकों पर शासन न करते रहें।'

चौधरी सर छोटूराम ने सीकर की एक आमसभा को संबोधित करते हुए कहा : दूसरे लोग जब सरकार से नाराज होते हैं, तो कानून तोड़ते हैं। लेकिन किसान जब नाराज होगा तो कानून ही नहीं तोड़ेगा, सरकार की पीठ भी तोड़ेगा। इसलिए मैं राजाओं, नवाबों और भारत की सभी प्रकार की सरकारों से कहता हूं, कि वह किसानों को इस हद तक तंग न करें, कि वह उग्र हो बैठें। मैं डवेमे की शिक्षा में विश्वास करता हूं। जिसके अनुसार एक आंख के लिए एक आंख और एक दांत के लिए के बदले में एक दांत लिया जाए। अगर कोई व्यक्ति मुझ पर पत्थर फेंकता है तो मैं उस पर भारी पत्थर फेंक दूंगा।

किसान शांति के समय में हल की मूठ पकड़कर अन्न पैदा करता है जिससे संसार का पालन होता है। अशांति के समय में तलवार की मूठ पकड़कर दुश्मन के दांत खट्टे करता है। क्या उपभोक्ताओं ने कभी उसकी कीमत को आंका है। किसान को लोग अन्नदाता तो कहते हैं, किंतु कोई यह नहीं देखता कि यह अन्य खाता भी है। जो कमाता है वही भूखा रहे, ये दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य है।

चौधरी सर छोटूराम कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में पारित प्रस्ताव के कुछ अंशों से सहमत नहीं थे। उदाहरण के लिए : भूमि कर अदा न करने, तथा स्कूल और कॉलेजों का बहिष्कार करने के पक्ष में नहीं थे। असहयोग आंदोलन के तमाम आधार ही गलत और मानव अनुभव के विपरीत हैं। मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि गांधीजी का असहयोग आंदोलन एक फिजूल की रणनीति है और मैं ऐसे में अपने पद से त्यागपत्र देता हूं।

1923 में यूनियनिस्ट पार्टी का गठन किया गया। भारत के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब किसी पिछड़े वर्ग के व्यक्ति ने अपने साथ समाज की ताकत, अपनी नीति-रणनीति के तहत, अपने बुद्धि कौशल के बल पर, सछूत/अछूत शूद्रों एवं अल्पसंख्यक मुसलमानों के सहयोग से यूनियनिस्ट पार्टी का गठन किया।

लाला लाजपत राय, चौधरी सर छोटूराम से सिर्फ इसलिए खफा थे, कि चौधरी सर छोटूराम पिछड़ों को द्विजातियों के सिर पर बैठाना चाहते हैं। 24 सितंबर 1924 से 26 दिसंबर 1926 तक कृषि मंत्री रहे।

मेरे लिए गांव और शहर, सेठ और किसान, आर्थिक समानता का सवाल सबसे पहले है। मेरा मानना है कि समानता ही स्वतंत्रता को जन्म देती है। जिन वर्गों को आर्थिक समानता हासिल हो नहीं होती, वे स्वतंत्रता से वंचित रह जाते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिसप्रकार शासक जातियों ने डॉक्टर अंबेडकर को संविधान सभा के चुनाव से लेकर लोकसभा के चुनाव में हराने के लिए अपने किसी दांव पेंच को नहीं छोड़ा। उसी प्रकार उन्होंने चौधरी सर छोटूराम के चुनाव में उन्हें हराने के लिए क्या-क्या षड्यंत्र नहीं किए। मात्र इसलिए कि इन दोनों व्यक्तियों ने अछूतों और पिछड़ों को ऊपर उठाने का कार्य क्यों किया?

आरक्षण पर बवाल क्यों? : सदियों से अधिकार वंचित सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग को उनकी जनसंख्या के अनुपात में उन्हें प्रतिनिधित्व प्रदान करना ही आरक्षण है। चौधरी सर छोटूराम एक वकील थे। और वकील का संबंध न्यायालय से होता है। वे चाहते थे, कि न्यायालय में यदि किसान कोमों को न्याय मिलना चाहिए, तो किसान कौमों का न्यायालय में उचित प्रतिनिधित्व भी होना चाहिए। सरकारी वकील भी किसान कौमों से लिए जाएं।

11 मार्च 1927 को काउंसिल में बहुजन समाज के सरकारी वकीलों के प्रतिनिधित्व पर सवाल उठाया, कि सरकारी वकीलों की नियुक्तियों में असमानता का व्यवहार हो रहा है। हमारे प्रांत में 28 सरकारी वकीलों के पद हैं। इनमें 15 पर द्विजातियां, 10 पर मुसलमान, 2 पर सिख, 1 पर ईसाई लगे हुए हैं। कहने के लिए हम सब हिंदू हैं। किंतु 15 हिंदुओं में से एक भी पिछड़े वर्ग का किसान नहीं है। मुसलमानों में से कितने किसान हैं, यह निश्चयपूर्वक कहा नहीं जा सकता। दोनों से एक भी किसान नहीं है। मेरा अनुमान है मुसलमानों में से 4 से अधिक किसान नहीं हो सकते। इस प्रकार 28 में से 4 ही किसान हैं। जबकि पंजाब में किसानों की संख्या 80% है।

चौधरी सर छोटूराम ने इस बार को उजागर करते हुए कहा : कि जुडिशियल सर्विसेस आंकड़े तो रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। सर छोटूराम यहां भी हतप्रभ हैं, कि जो द्विजातियां हमें हिंदू कहती हैं, वह अपने इन हिंदू भाइयों की चिंता किए बगैर, न्यायपालिका में अपना वर्चस्व ब्रिटिश हुकूमत की सांठगांठ से बनाए रखती हैं। वह न्यायपालिका के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि, इस विभाग में 13 पद सेशन जज सिलेक्शन ग्रेड के हैं, इनमें से 8 द्विजातियों के, 2 मुसलमानों, 1 सिख, और 2 पद एंगलो इंडियन द्वारा ग्रहण किए हुए हैं। इनमें से कोई भी किसान (पिछड़े वर्ग) का नहीं है। सेशन जजों के उपयुक्त पदों के अतिरिक्त 154 पद स्थाई रूप से जजों के हैं। इनमें से 78 द्विजातियों, 55 पर मुसलमान, 17 पर सिख और 4 पर ईसाई आसामी नियुक्त हैं। परंतु उनकी सूचना के अनुसार ये पद 154 न होकर 184 हैं। इनमें 92 द्विजातियां, 64 मुसलमान, 21 सिख और 7 इसाई हैं। इनमें से भूमि हस्तांतरण अधिनियम की परिभाषा के अनुसार, एक किसान(पिछड़ा) है, और 3-4 किसान सीख हैं, और मुसलमानों में से 30 के लगभग किसान हैं। इस प्रकार पिछड़े किसान कौमों की संख्या जुडिशयरी से बहुत कम है।

चौधरी सर छोटूराम प्रतिनिधिक न्यायपालिका के पक्ष में थे। उन्हें हमेशा यह बात खटकती थी, कि बहुजनों को तब तक न्याय नहीं मिल सकता, जब तक उनके प्रतिनिधि न्यायपालिका में नहीं होंगे।

आर्य ब्राह्मण जो जाति प्रथा का जन्मदाता है, उसने सबसे अधिक अपनी बेटियां संपन्न चूड़ा-चमारों, माला, मादिका और महारों में ब्याहीं। इसलिए नहीं कि उसे जातिभेद मिटाना है। बल्कि इसलिए कि इन अछूतों और पिछड़ों से निकले मेधावी अधिकारियों

को आपस में प्रीत की डोर में बांधकर, उन्हें उनके समाज की प्रीत की डोर में न बंधने देना है। अन्यथा यदि वे अपने समाज की प्रीत की डोर में बंध गए, तो जाति प्रथा का ही विनाश कर देंगे। जाति प्रथा के विनाश के साथ-साथ शासक जातियों की सत्ता की डोरी का भी विनाश हो जाएगा।

प्रोफेसर रंजीत सिंह : "जाटों के प्रति उनकी भावना इतनी प्रबल थी, कि उन्होंने उत्तर प्रदेश के संबंध में लिखा है, कि उत्तर प्रदेश पर में जाटों को इसलिए मृत समझता हूं, कि वहां पर जाटों की भारी संख्या होते हुए भी यह महत्वपूर्ण पदों पर नहीं हैं। एक बार उन्होंने 1944 में भावना में आकर यहां तक कह दिया था कि, "राज करेगा जाट, जाट करेगा राज"। इसको लेकर पंजाब विधानसभा में बड़ा भारी हंगामा हुआ। इसका उत्तर देते हुए चौधरी साहब ने लगभग 30,000 लोगों की उपस्थिति में यह बात कही थी। इसमें 95% जाट थे। मेरा ऐसा कहने का अभिप्राय था, कि प्रजातंत्र में वही शासन करेगा, जिसकी संख्या अधिक होगी। चाहे वह भारत हो अथवा भारत का कोई प्रांत।"

बहुत वर्षों के पश्चात जब चौधरी सर छोटूराम पंजाब सरकार में मंत्री बने, तो उन्हें मुजफ्फरनगर के जाट कालेज के उत्सव पर बुलाया गया। और उस उत्सव में जिलाधीश भी आमंत्रित थे, जिनका संबंध गैर जाट जाति से था। अपने भाषण में चौधरी सर छोटूराम को पूर्ण सम्मान देते हुए जिलाधीश महोदय ने कहा, 'किसानों को सरकारी नौकरियों के पीछे दौड़ने की अपेक्षा अपने पैतृक व्यवसाय खेती-बाड़ी करने में ध्यान लगाना चाहिए।' जबकि चौधरी छोटूराम ने इस बात का हमेशा ख्याल रखा कि पंजाब का किसान आर्थिक रूप से समृद्ध तभी हो सकता है, जब वह पढ़ाई के साथ-साथ नौकरियों में प्रवेश करे। ऐसी दशा में चौधरी सर छोटूराम जिलाधीश की बात को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। चौधरी सर छोटू राम : जिलाधीश महोदय राज्य की नौकरी गुलामी नहीं है। यह तो राज में हिस्सा लेना या हाथ बटाना है। जो लोग नौकरी नहीं करते वे राज्य में अपना हिस्सा प्राप्त नहीं कर सकेंगे। यह बहुत ही ऐतराज़ का मामला है कि अधिक योग्यता होने पर भी किसानों के मुकाबले में गैर किसानों (द्विजातियों) को तरजीह दी जाती है।नौकरी यदि बुरी चीज है तो कलेक्टर साहब आप अपने पैतृक व्यवसाय के छोड़कर नौकरी में क्यों आए हो। चौधरी साहब की स्पष्टवादिता एवं नाराजगी देखकर सभा की समाप्ति पर कलेक्टर साहब ने अपने वक्तव्य पर खेद प्रकट किया।

चौधरी सर छोटूराम : मेरे एक मित्र ने सदन में कहा, कि प्रदेश में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ है। यदि मेरे दोस्त एक विशेष वर्ग द्वारा सरकारी पदों के एकाधिकार को ही राष्ट्रीयता का विकास मानते हैं तो मेरा विचार है कि ऐसी राष्ट्रीयता को मौत के घाट उतार देना चाहिए। शांति उसी समय आएगी जब तुम उनके समुचित अधिकारों को मंजूर कर लोगे। तब तक शांति नहीं हो सकती, जब तक कि पंजाब की आबादी के 10% लोगों का एकाधिकार सरकार के पदों पर है। चौधरी सर छोटूराम के आर्थिक दर्शन में पिछड़े वर्ग को शासन प्रशासन में उनकी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व प्रदान करना था। ऐसा न हो कि कमायें धोती वाले और खाएं टोपी वाले।

चौधरी सर छोटूराम पंजाब प्रांत में हरित क्रांति का सपना अपने दिल में सजे हुए थे। उन्होंने अपनी आंखों के सामने देखा, कि सूखा और बाढ़ की चपेट में पंजाब और हरियाणा में होने वाली फसल चौपट हो जाती है। पंजाब के किसान की सारी मेहनत मिट्टी में मिल जाती है। चौधरी सर छोटूराम की चाहत थी, कि पंजाब प्रांत के भाखड़ा नामक पहाड़ी स्थल पर एक बांध यदि बन जाता है, तो बाढ़ और सूखे की त्रासदी से बचा जा सकता है। 1923 में जब चौधरी सर छोटूराम पंजाब परिषद में चुनकर आए तो वहां उन्हें पता चला कि उनकी चाहत पर निकल्सन नाम के अंग्रेजी इंजीनियर पहले से ही भाखड़ा पहाड़ी स्थल पर बांध बनाने की माथापच्ची शुरू कर चुके थे।

कुछ समय पश्चात चौधरी सर छोटूराम ने सदन में एक प्रस्ताव पेश किया, कि यह परिषद सरकार से अनुरोध करती है कि "भाखड़ा बांध परियोजना" के क्रियान्वयन के लिए भारत सरकार और राज्य परिषद से मंजूरी लेने के लिए जोरदार प्रयास किए जाएं। काफी मशक्कत के बाद आखिरकार सरकार ने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

चौधरी सर छोटूराम ने तमाम अड़चनों के बाद भाखड़ा बांध परियोजना निर्माण की सारी रुकावट को दूर किया। इस योजना को अंतिम रूप देने के लिए जो कुछ भी किया जाना आवश्यक था, 1944 तक किया जा चुका था। लेकिन महाशोक! चौधरी सर छोटूराम अपने सपने को साकार होते हुए देखने के लिए जीवित नहीं रहे। इस परियोजना में लगाए गए प्रत्येक पत्थर में उस महान नेता का त्याग और समर्पण अंकित है। आज पंजाब और हरियाणा, दोनों राज्य गेहूं और चावल के उत्पादन में सर्वोपरि स्थान रखने का गौरव प्राप्त किए हुए हैं। तो यह भाखड़ा नांगल बांध की वजह से है। जिस दिन मूलनिवासी

बहुजन समाज के लोग चौधरी सर छोटूराम को सही मायने में समझ जाएंगे, उस दिन भाखड़ा नांगल बांध का नाम "दीनबंधु चौधरी सर छोटूराम" होगा। यह तभी संभव है जब 'अत्त दीपो भव' को अपने जीवन के अमल में लाएंगे।

चौधरी सर छोटू राम : किसानों को जिसप्रकार की धार्मिक शिक्षा दी जाती है, वह उन्हें अकर्मण्य बनाती है, और अत्यधिक हीन भावना पैदा करने वाली है। किसानों ने अपने घरों में हजारों देवी-देवताओं का निर्माण कर लिया है। किसानों! स्वामी बनो, दास नहीं। उच्च शिक्षा प्राप्त चौधरी सर छोटूराम ब्राह्मणवादी मूल्यों, भाग्यवाद, पुनर्जन्म, अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार के दुश्मन थे। चौधरी सर छोटूराम के धार्मिक दर्शन में ऐसा कोई संदेश नहीं, कि कम कर्म करो फल की इच्छा मत करो। उनके धार्मिक दर्शन में कर्म ही पूजा है। फल की इच्छा से ही कर्म करो।

सोहन लाल शास्त्री चौधरी सर छोटूराम की अछूतों के प्रति अगाध प्रेम की चर्चा करते हुए कहते हैं : जब पंजाब में यूनियनिस्ट सरकार बनी, अछूतों को सरकारी नौकरी में पहले पहल तभी लिया गया। मुझे अच्छी तरह से स्मरण है कि, जब एक अछूत युवक, जिसने B.A., LLB, पास करने के पश्चात पीसीएस की परीक्षा पास की, तो लिस्ट में सबसे नीचे स्थान प्राप्त किया। सर मनोहर लाल ने उन्हें पीसीएस में स्थान देना नहीं चाहा, क्योंकि वह योग्यता में दूसरे हिंदुओं के मुकाबले बहुत निम्न स्तर पर था। चौधरी सर छोटूराम ने पूरा जोर लगाकर उस अछूत उम्मीदवार को पीसीएस बनाकर ही दम लिया। इस घटना पर पंजाब सरकार की द्विजातियों ने घोर विरोध किया। किंतु चौधरी साहब का निर्णय अटल था। आज वही अछूत युवक पंजाब में बतौर सेशन जज काम कर रहा है।

चौधरी सर छोटूराम इस बात को कतई मानने के लिए तैयार नहीं थे, कि भूमि की असली मालिक सरकार है। वह तर्क देते थे कि जैसे एक जंगली हिरण जिसकी तीर से मरा है वह उसी का होगा। ठीक उसी प्रकार भूमि उसकी होती है, जो उस पर खेती करता है। 1931 में पंजाब भूमि हस्तांतरण कानून पास किया गया। जिसमें चौधरी सर छोटूराम ने किसानों के हितों को सर्वोपरि रखा।

भारतीय किसान कर्जे में उत्पन्न होता है। कब्जे में ही जीवन व्यतीत करता है, और कर्जे में ही मर जाता है। चौधरी सर छोटूराम पंजाब कर्जा राहत कानून पर बोलते हुए कहा-

हमको कहा जाता है कि हम धमकी देकर कानून बनवाना चाहते हैं। हमने ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दी है कि यदि यह कानून नहीं बना तो रक्तपात बढ़ जाएगा। यदि साहूकारों को यहीं छूट रही कि किसानों के हल बैल, खाने पीने की चीजें और पहनने के कपड़े तक कुर्क करा सकें। तो इस निर्दयता का यह परिणाम हो सकता है, कि साहूकारों की हत्या होने लगे। हमसे यह कहा जाता है कि हम बंदूकों के बल पर कानून बनवा रहे हैं। हमारे पास बंदूकें नहीं है, केवल वास्तविकता प्रकट करने की शक्ति है। प्रत्येक सभ्य सरकार का यह कर्तव्य है, कि वह इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए मूल बीमारी की चिकित्सा करे। चौधरी साहब के निरंतर प्रयास से 1940 में कर्जदार की परिभाषा में परिवर्तन हुआ, और इसमें पिछड़े वर्ग के लोगों को सम्मिलित किया गया। चौधरी सर छोटूराम ने 1926 में इंतकाल आराजी कानून लागू करवाया। इस कानून में किसानों के अधिकारों की रक्षा हुई। 1940 में उन्होंने ट्रेड एंप्लाइज एक्ट पास कराकर कार्यविधि 8 घंटा करवाया अन्यथा सरकार उनसे बंधुआ मजदूर जैसा काम लेती थी।

चौधरी सर छोटू राम के निगाह में ब्राह्मण देवता नहीं। अगर वह देवता होता तो सभी को शिक्षा देता, जो उसका कर्म और धर्म निर्धारित किया गया था। वह तो लेवता है, शूद्रों और अति शूद्रों की शिक्षा ही छीन लेता है। सोनीपत के किसान सम्मेलन में बोलते हुए कहा : किसान भाइयों! मैं आपके हित के लिए कोई काम करता हूं या नहीं, इसका अंदाजा आप इससे लगाते रहना, कि द्विजातियां और अखबार मुझे कितनी कड़वी गाली दें। आप समझना कि छोटूराम हमारे लिए इतना ही बड़ा काम कर रहा है। जिस दिन वे गाली देना बंद कर दें, उस दिन आप समझ लेना कि छोटूराम बदल गया है।

चौधरी सर छोटूराम सांप्रदायिकता के विरोधी थे। मजहब तो व्यक्तिगत जीवन से संबंध रखता है, और वह बदला भी जा सकता है लेकिन वसूल नहीं बदले जा सकते। वे राजनीतिक सत्ता धर्म से नहीं, बल्कि मूलनिवासी बहुजनों की शक्ति से प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रेरित करते थे। चौधरी सर छोटूराम संदेश देते हैं :-

चमन जा रे सियासत में खामोशी मौत है बुलबुल।

यहां भी जिंदगी पाबंदि-ए-रस्में फुगां तक है।।

अर्थ : अभी बुलबुल! यदि तुम राजनीति के बगीचे में चुप रहोगी, तो तो मौत को बुलाओगी। यदि राजनीति के संसार में जीवित रहना चाहती हो, तो तुम आंदोलनों का शोर मचाओ... गर्जना करो।

चौधरी सर छोटूराम 9 जनवरी 1945 को हम से विदा हो गए। किंतु उनके विचार आज भी जिंदा हैं। वह दीनबंधु ही नहीं, बहुजन बंधु हैं।

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : मूल लेखक : दयाराम, विक्रम सिंह पवार
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था लखनऊ (उ.प्र.), २४.११.२०२०
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबा. 7355175480